आपातकाल में सृजन फुलवारी

स्मिता जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

स्मिता जैन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-219-7
सपादक- डा. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www-antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, स्मिता जैन
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY SMITA JAIN
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुजर रहां है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (COVID19) जैसी महांमारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महांमारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय श्समकित सुरानाश् से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हांमी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय "संदीप सोनी" ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सजा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	आज का मजदूर	6
2.	शब्दों का खेल	7
3.	मंजिल	8
4.	खुशियाँ	9
5.	मुसाफिर	10
6.	चिंता से चाह भली	11
7.	हिम्मत हारे मत बैठो	12
8.	जो बनना है बन जाना	13
9.	बिखरे हुए पन्ने	14
10.	पापा की गुड़िया	15
11.	मेरे गुरुवर	16
12.	मैं से हम	17
13.	नई सुबह	18
14.	मीत	19
15.	ओ स्त्री तू कल आना	20
16.	चलते-चलते	21

आज का मजदूर

निकल चुका हूँ शहर को छोड़
अपने उस गांव की ओर।

सोचा ना था ऐसा दिन भी आएगा
जीवन मुझे ये क्षण भी दिखलाएगा,
जिन रास्तों को नाप-नाप कर बांधा मैंने उन रास्तों को आज खुद
नापना पड़ जायेगा।

सोचा ना था इतना दूर होगा मेंरा गांव
चलता जा रहा हूँ बस पांव-पांव
नन्हे-मुन्नों को अपने कांधों पर उठा
बना लेते हैं सर का ताज,
तो कभी उन्हें गोद में उठा चलते जा रहे हैं आज।

कुछ साथी चल रहे थे साथ
आगे चलकर देखा तो?
गुम हो गए वो कहीं आज
सुबह हुई पता चला
मौत ले गई उन्हें अपने साथ।

सोचा ना था ऐसा दिन भी आएगा
अपना ही अपने से मिलने से कतराएगा।

शब्दों का खेल

कुछ शब्द हमें ऐसे सुनाई पड़ते हैं
जैसे अंधेरों में रास्ता दिख रहा हो
तो कुछ शब्द हमारे सूने पड़े मन पर
अपनी छाप छोड़ते जा रहे हों।

शब्दों का खेल भी निराला है
इनसे कहीं अंधेरा तो कहीं उजाला है

कई शब्द होते हैं उदासी से भरे पड़े
तो कुछ शब्द होते हैं
खुशियों का दामन लिए खड़े
कुछ शब्दों से संवर जाती है जिंदगी
तो कुछ शब्दों से बिखर जाती है जिंदगी।

शब्दों का खेल बड़ा निराला है
इनसे कहीं अंधेरा तो कहीं उजाला है।

मंजिल

कितनी भी दूर हो मंजिल
चलते-चलते कट जाती है!

कितनी भी रात अंधेरी हो पर
धीरे-धीरे बीत जाती है!

साहस कर तू बड़े चल आगे
हारकर न हो निराश!

अंधेरी रात की बेला में भी
एक सितारा राह दिखाता!

विश्वासों की कुछ किरणों से
दुख की बदली घट जाती है!

कितनी भी दूर हो मंजिल
चलते-चलते कट जाती है।

खुशियाँ

खुशियों की चादर ओढ़े
दुनिया ने दुख: भुलाया
उम्मीदों के सपनों को पाकर
सुंदर फूल खिलाया।

आज फिर भारत की पलकों में
नए-नए सपने हैं जागे,
बजते हैं तार हृदय के
क्या होने वाला आगे।

इन कठिन समय की डोरी को
ऊपर कौन चढ़ाता है,
उम्मीदों के पंख लगा फिर
अनजान दिशा को जाता है।
खुशियां हमें फिर बुला रही है
अपने घर ले जाने को।

मुसाफिर

देख पाप का रुप सुहाना
करना ना उससे प्यार
मुसाफिर उनसे ले विश्राम।

तेरा काम है चलते रहना
पाप काम से डरते रहना,
जीवन अनुभव से करते रहना
उनका काम तमाम।
मुसाफिर उनसे ले विश्राम।

चाहे फूलों सा आकर्षण हो
चाहे सावन का आमंत्रण हो
मुंह में आकर फस ना जाना
यही नहीं है तेरा काम।
मुसाफिर उनसे ले विश्राम।

चिंता से चाह भली

चाह गई चिंता मिटी
हो गए बेपरवाह,
अगर चाह रखे ना कोई
तो जीवन कैसे हो निर्वाह।

चाह अगर रखोगे तो
जीवन सफल बनाओगे
चिंता अगर पा लोगे तो
जीवन नर्क कर जाओगे।

चाहा जीवन को राह दिखाती
चिंता जीवन को राख बनाती।
चिंता से चाह नहीं
चाह से चिंता मिटाना है,
अगर जीवन सफल बनाना है।

हिम्मत हारे मत बैठो

आगे बढ़ना है जीवन पथ पर
तो हिम्मत हारे मत बैठो।
जीवन में कुछ करना है
तो मन को मारे मत बैठो।

हरदम चलने वाला
मंजिल अपनी पाता है।

बैठा-बैठा जो सोच रहा
वह पीछे ही रह जाता है।

ठहरा पानी भी सड़ने लगता
बहता पानी निर्मल होता है।

पांव दिए चलने खातिर
पांव पसारे मत बैठो।
आगे बढ़ना है जीवन पथ पर
तो हिम्मत हारे मत बैठो।

जो बनना हो बन जाना

मैं जो चाहती हूँ वह नहीं
तुम जो चाहती हो वह बन जाना,
खुद अपनी नई पहचान बनाकर
मेरी पहचान तुम बन जाना।

अपने सारे ख्वाबों को पूरा करना
पर हां उसमें से थोड़े सपने,
मेरे भी पूरे करते जाना
और अपनी मंजिल पा जाना।

ज्यादा तो नहीं बस थोड़ी सी आस है
वही पूरी कर सको तो करते जाना,
अपनी ख्वाहिशों के पंख लगा कर
आसमान को छूते जाना
जो बनना है वह बन जाना।

बिखरे हुए पन्ने

कुछ बिखरे हुए से पन्ने
जिन्हें कई वर्षों से
लिखती आ रही थी
उन बिखरे हुए से पन्नों को
अब समेट कर रखना चाहती हूँ।

बहुत हुआ बस अब इन्हें
एक साथ करना चाहती हूँ,
मन में उभरी हुई बातों को,
दिल में उठे जज्बातों को,
बिखरे हुए उन ख्वाबों को,

जीवन की बीती हुई उन बातों को,
बस इन पन्नों से समेट कर
नई रचना रचना चाहती हूँ।
इन बिखरे हुए पन्नों को
अब समेटना चाहती हूँ।

पापा की गुड़िया

एक बार फिर से पापा ने खुद को
समझदार बनाया है
बेटे के रूप में अपनी बेटी को अपनाया है।

हर बात अपनी
मुझसे कहना पापा
अपने हर दुखों को
मुझसे बांट लेना पापा, मैं आपकी गुड़िया हूँ।

एक बार बस एक बार
मौका दे कर देखो पापा
जी खोलकर इन पंखों को
उड़ने दो ना पापा, मैं आपकी गुड़िया हूँ।

उड़-उड़ करके सारी खुशियां
आज तुम्हारे लाऊंगी
बेटी के रूप में जन्म लिया है
बेटा बनकर फर्ज निभाऊंगी, मैं आपकी गुड़िया हूँ।

अपने लिए बाजार हो जाते
सब मेरे लिए हो ले आते
मेरे तरफ एक आज भी आए
तो खुद आगे हो जाते, मैं आपकी गुड़िया हूँ।

दुख हो चाहे सुख हो
आंखें कभी आपकी नम नहीं होती
मेरे लिए आपकी दुआएं
कभी कम नहीं होती, मैं आपकी गुड़िया हूँ।

मेरे गुरुवर

(तरुण सागर जी)

गुरुवर आप चले गए मनमर्जी से
मनमर्जी करते आए हो
हम भक्तों को छोड़ गए तन्हा
जिन धर्म के पथ पर चलाते आए हो
क्या लगता है? सब बढ़िया है?
अब चिंता की कुछ बात नहीं
शेष बचा आप बताया धर्म पथ
इस दुनिया में बस आज आप नहीं
हे क्रांतिकारी अवतारी
गर बहुत जरूरी था जाना
जाओ पर ज्यादा दूर नहीं जाना
हे गुरुवर जल्दी वापस आ जाना
संत आपसा गुरुवर
दशकों शतकों में आता है
आपके गुणों को देख
बिन कहे रहा नहीं जाता है।
राष्ट्रीय संत एक ही थे
जो कड़वी सच्चाई बतलाते थे
जो मंत्रमुग्ध हो सब सुनता था
सब तर्क कुंद हो जाते थे
धर्म पथ पर चलना सिखा गए
पर मंजिल मिलना बाकी है
यह धर्म नीति की बात नहीं
चिंता बस जिन शासन की है।

मैं से हम

'मैं' में अक्सर जीने वाले
मैं ही बनकर रह जाते हैं

मैं अगर चाहूँ तो सब कर दूँ
दुनिया की सारी रीत बदल दूँ
ऐसा कह इतराते हैं।
मैं में अक्सर जीने वाले
मैं ही बन कर रह जाते हैं।

'हम' शब्द को अपनाने वाले
हम बन एक हो जाते हैं
जहां एक अकेली मैं की लकड़ी
एक पल में सब तोड़ गिराते हैं
वहां सब हम की लकड़ी पर जोर लगाते हैं
फिर भी उसे कोई तो नहीं पाते हैं।

नई सुबह

रात सभी की नींद है
नई सुबह नई राह दिखाती है।
आकाश को चीर नन्हीं किरने
भोर होते ही आती है।

अपनी कोमलता से हममें
नया उत्साह भर जाती है।
चलना है अब उत्साह के संग
भरना है जीवन में नए रंग।

अपना जीवन सफल बनाना है
हरदम आगे बढ़ते जाना है।
आज की इस सुबह से
हर सुबह नई बनाना है।

मीत

मेरे मीत तुम कहीं भी छुपो
मैं तुम्हें पहचान लूंगी।

चाहे तुम कहीं भी जाओ
परछाई बन संग आऊंगी
इस दुनिया में मेरे मीत
मैं तुम्हारे लिए ही आई हूँ।

तुम ही में सारे अरमान मेरे
हो तुम ही धनमान मेरे
हे तुम्हारे लिए ही सारे
गाए हुए हैं सारे गान मेरे।

हूँ तुम ही में समाई मेरे मीत
और क्या वरदान लूंगी
तुम कहीं भी छिपो प्रिय
मैं तुम्हें पहचान लूंगी।

ओ स्त्री तू कल आना

ओ स्त्री तू आज नहीं फिर कल आना
तुझे तेरा खोया हुआ सम्मान है लौटाना
जिस मिट्टी से तू उभरी है
जिस मिट्टी ने तुझे बनाया है
आज इस दुनिया में तेरी हालत देख
अंबर भी शरमाया है।

हर दुखों को तू हर लेती
हर गमों को तो पी जाती है
इस युग में तेरी दशा को देख
धरती भी रुदन सुनाती है।
देख देखकर तेरी दशा को आज
यह दुनिया घबराती है।

आज एक मौका देकर देख
इन दरिंदों को सुधारने का
तेरे खोए हुए सम्मान को
फिर से हमें लौटाना है
इसीलिए तो कहते हैं
ओ स्त्री तुझे आज नहीं कल आना है।

चलते-चलते

चलते-चलते ऐसा कुछ करते जाना,
खुद को नई पहचान दिलाना।
अच्छे कर्म अपनाएं हम,
जीवन सफल बनाएं हम।

साथ देते हैं कर्म हमारे,
और कुछ नहीं जाता साथ हमारे।
कर्म हमारे बने कुदाली,
कर जाएं शत्रु को खाली।

कर्म हमारे तलवार बन जाए,
शत्रु के आगे ललकार दिखाएं।
चलते चलते अच्छे कर्म करते जाना,
अपना जीवन सफल बनाना।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

स्मिता जैन

वाटिका साड़ी एण्ड सुट
कृष्णा डेयरी रोड़, वार्ड नं. २१
बालाघाट (म.प्र)

Email- smita7359@gmail.com

9340539325

जीवन में कुछ करना है तो मन के मारे मत बैठो। चारों ओर विश्व भर में महामारी के डर से हम सब आज अपने अपने घरों में सुरक्षित रहकर अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। ऐसे में हमारे मानस पटल पर कभी आशा तो कभी निराशाओं की लहरें उठती रहती है उन्हीं निराशाओं को रोकने का सबसे अच्छा तरीका होता हैं अपने अपने अंदर छुपी हुई कलाओं का प्रदर्शन करना जैसे कि एक लेखक अपने अंदर छुपी हुई रचनाओं और लेख को कई पन्नों पर उतारता चला जाता है। वैसे ही इस कठिन समय में कई अच्छे अच्छे रचनाकारों ने अपनी रचनाओं को हम सबके सामने अंतरा शब्दशक्ति द्वारा समाज में प्रगट किया है।

ऐसे ही इन सभी अंतरा शब्दशक्ति के रचनाकारों को पढ़कर और डॉ. प्रीति सुराना जी इनकी रचनाओं को पढ़कर मेरा मन बहुत प्रभावी हुआ। कुछ सालों से मैं भी थोड़ा लिखतीं आ रही थी और डॉ. प्रीति सुराना जी से बात करते ही मुझे बहुत अच्छा लगा उन्होंने मुझे बहुत अच्छा रस्ता दिया अपने शब्दों को आप सभी तक पहुंचाने का मैं उनकी बहुत बड़ी आभारी हूं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-219-7

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/